

سُورَةُ النُّورِ

Surah 24 — An-Noor (The Light) · Medinan · 64 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سُورَةُ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ ۖ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

(ये) एक सूरा है जिसे हमने नाज़िल किया है और उस (के एहक़ाम) को फर्ज कर दिया है और इसमें हमने वाज़ेए व रौशन आयतें नाज़िल की हैं ताकि तुम (ग़ौर करके) नसीहत हासिल करो

2

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا ۖ كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ ۖ فِي دِينِ اللَّهِ إِن كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابُهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ

ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाले मर्द इन दोनों में से हर एक को सौ (सौ) कोड़े मारो और अगर तुम खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान रखते हो तो हुक्मे खुदा के नाफ़िज़ करने में तुमको उनके बारे में किसी तरह की तरस का लिहाज़ न होने पाए और उन दोनों की सज़ा के वक्त मोमिन की एक जमाअत को मौजूद रहना चाहिए

3

الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً ۖ وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۖ وَحَرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

ज़िना करने वाला मर्द तो ज़िना करने वाली औरत या मुशरिका से निकाह करेगा और ज़िना करने वाली औरत भी बस ज़िना करने वाले ही मर्द या मुशरिक से निकाह करेगी और सच्चे ईमानदारों पर तो इस किसिम के ताल्लुकात हaram हैं

4

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا ۖ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً ۖ وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۖ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

और जो लोग पाक दामन औरतों पर (ज़िना की) तोहमत लगाएँ फिर (अपने दावे पर) चार गवाह पेश न करें तो उन्हें अस्सी कोड़ें मारो और फिर (आइन्दा) कभी उनकी गवाही कुबूल न करो और (याद रखो कि) ये लोग खुद बदकार हैं

5

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ۖ مِنْ ۖ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۖ رَحِيمٌ ۖ

मगर हाँ जिन लोगों ने उसके बाद तौबा कर ली और अपनी इसलाह की तो बेशक खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

6

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَدَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ
شَهَدَاتٍ ۖ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ ۖ لَمِنَ الصَّادِقِينَ

और जो लोग अपनी बीवियों पर (ज़िना) का ऐब लगाएँ और (इसके सुबूत में) अपने सिवा उनका कोई गवाह न हो तो ऐसे लोगों में से एक की गवाही चार मरतबा इस तरह होगी कि वह (हर मरतबा) खुदा की क़सम खाकर बयान करे कि वह (अपने दावे में) जरूर सच्चा है

7

وَالْخُمِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ

और पाँचवी (मरतबा) यूँ (कहेगा) अगर वह झूट बोलता हो तो उस पर खुदा की लानत

8

وَيَدْرَأُوا ۖ عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ ۖ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ ۖ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ

और औरत (के सर से) इस तरह सज़ा टल सकती है कि वह चार मरतबा खुदा की क़सम खा कर बयान कर दे कि ये शख्स (उसका शौहर अपने दावे में) जरूर झूठा है

9

وَالْخُمِسَةُ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ

और पाँचवी मरतबा यूँ करेगी कि अगर ये शख्स (अपने दावे में) सच्चा हो तो मुझ पर खुदा का ग़ज़ब पड़े

10

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ

और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल (व करम) और उसकी मेहरबानी न होती तो देखते कि तोहमत लगाने वालों का क्या हाल होता और इसमें शक ही नहीं कि खुदा बड़ा तौबा कुबूल करने वाला हकीम है

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۚ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا ۚ لَّكُم ۚ بَلْ هُوَ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ ۚ لِكُلِّ أَمْرٍ ۚ مِّنْهُمْ مَّا اُكْتُسِبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ ۚ مِنْهُمْ لَهُ ۚ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ

बेशक जिन लोगों ने झूठी तोहमत लगायी वह तुम्ही में से एक गिरोह है तुम अपने हक में इस तोहमत को बड़ा न समझो बल्कि ये तुम्हारे हक में बेहतर है इनमें से जिस शख्स ने जितना गुनाह समेटा वह उस (की सज़ा) को खुद भुगतेगा और उनमें से जिस शख्स ने तोहमत का बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ी (सख्त) सज़ा होगी

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرٌ ۚ وَقَالُوا ۚ هَذَا إِفْكٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

और जब तुम लोगो ने उसको सुना था तो उसी वक्त ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों ने अपने लोगों पर भलाई का गुमान क्यों न किया और ये क्यों न बोल उठे कि ये तो खुला हुआ बोहतान है

لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا ۚ بِالشُّهَدَاءِ فَأُو۟لَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ

और जिन लोगों ने तोहमत लगायी थी अपने दावे के सबूत में चार गवाह क्यों न पेश किए फिर जब इन लोगों ने गवाह न पेश किये तो खुदा के नज़दीक यही लोग झूठे हैं

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आखिरत में खुदा का फज़ल (व क़रम) और उसकी रहमत न होती तो जिस बात का तुम लोगों ने चर्चा किया था उस की वजह से तुम पर कोई बड़ा (सख्त) अज़ाब आ पहुँचता

15

إِذْ تَلَقَّوْنَهُۥ ۖ بِالسِّنِّتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُم بِهِ ۖ عِلْمٌ ۖ وَتَحْسَبُونَهُۥ ۖ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۖ

कि तुम अपनी ज़बानों से इसको एक दूसरे से बयान करने लगे और अपने मुँह से ऐसी बात कहते थे जिसका तुम्हें इल्म व यकीन न था (और लुत्फ ये है कि) तुमने इसको एक आसान बात समझी थी हॉलाकि वह खुदा के नज़दीक बड़ी सख्त बात थी

16

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَنَكَ هَذَا بُهْتَنٌ عَظِيمٌ ۖ

और जब तुमने ऐसी बात सुनी थी तो तुमने लोगों से क्यों न कह दिया कि हमको ऐसी बात मुँह से निकालनी मुनासिब नहीं सुबहान अल्लाह ये बड़ा भारी बोहतान है

17

يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا ۖ لِمِثْلِهِ ۖ أَبَدًا ۖ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

खुदा तुम्हारी नसीहत करता है कि अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खबरदार फिर कभी ऐसा न करना

18

وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

और खुदा तुम से (अपने) एहकाम साफ साफ बयान करता है और खुदा तो बड़ा वाकिफकार हकीम है

19

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفُحْشَةُ فِي الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

जो लोग ये चाहते हैं कि ईमानदारों में बदकारी का चर्चा फैल जाए बेशक उनके लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है और खुदा (असल हाल को) खूब जानता है और तुम लोग नहीं जानते हो

20

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ ۖ رَحِيمٌ ۖ

और अगर ये बात न होती कि तुम पर खुदा का फ़ज़ल (व करम) और उसकी रहमत से और ये कि खुदा (अपने बन्दों पर) बड़ा शफीक मेहरबान है

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا﴾ لَا تَتَّبِعُوا ﴿خُطُوتِ الشَّيْطَانِ﴾ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ ﴿يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ ﴿مَا زَكَى مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا﴾ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ ﴿وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾

(तो तुम देखते क्या होता) ऐ ईमानदारों शैतान के क़दम ब क़दम न चलो और जो शख्स शैतान के क़दम ब क़दम चलेगा तो वह यकीनन उसे बदकारी और बुरी बात (करने) का हुक्म देगा और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल (व क़रम) और उसकी रहमत न होती तो तुममें से कोई भी कभी पाक साफ़ न होता मगर खुदा तो जिसे चाहता है पाक साफ़ कर देता है और खुदा बड़ा सुनने वाला वाकिफ़कार है

وَلَا يَأْتَلِ أَوْ ﴿لُوا﴾ الْفَضْلَ مِنْكُمْ وَالسَّعَةَ أَن يُؤْتُوا أَوْ ﴿لِ الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهْجَرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ﴾ وَلِيَعْفُوا ﴿وَلِيَصْفَحُوا﴾ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ﴿وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾

और तुममें से जो लोग ज्यादा दौलत और मुक़द्दर वाले हैं क़राबतदारों और मोहताजों और खुदा की राह में हिज़रत करने वालों को कुछ देने (लेने) से क़सम न खा बैठें बल्कि उन्हें चाहिए कि (उनकी ख़ता) माफ़ कर दें और दरगुज़र करें क्या तुम ये नहीं चाहते हो कि खुदा तुम्हारी ख़ता माफ़ करे और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا ﴿فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾

बेशक जो लोग पाक दामन बेख़बर और ईमानदार औरतों पर (ज़िना की) तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में (खुदा की) लानत है और उन पर बड़ा (सख्त) अज़ाब होगा

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

जिस दिन उनके ख़िलाफ़ उनकी ज़बानें और उनके हाथ उनके पाँव उनकी कारस्तानियों की गवाही देंगे

يَوْمَئِذٍ ۚ يُوفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ

उस दिन खुदा उनको ठीक उनका पूरा पूरा बदला देगा और जान जाएंगे कि खुदा बिल्कुल बरहक़ और (हक़ का) ज़ाहिर करने वाला है

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۚ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

गन्दी औरते गन्दें मर्दों के लिए (मुनासिब) हैं और गन्दे मर्द गन्दी औरतो के लिए और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए (मौज़ू) हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए लोग जो कुछ उनकी निस्बत बका करते हैं उससे ये लोग बुरी उल ज़िम्मा हैं उन ही (पाक लोगों) के लिए (आखिरत में) बख़्शिस है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَدْخُلُوا ۚ بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا ۚ وَتُسَلِّمُوا ۚ عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

और इज्जत की रोज़ी ऐ ईमानदारों अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में (दर्ना) न चले जाओ यहाँ तक कि उनसे इजाज़त ले लो और उन घरों के रहने वालों से साहब सलामत कर लो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है

فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا ۚ فِيهَا أَحَدًا ۚ فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ۚ ارْجِعُوا ۚ فَارْجِعُوا ۚ ۚ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۚ

(ये नसीहत इसलिए है) ताकि तुम याद रखो पस अगर तुम उन घरों में किसी को न पाओ तो तावाक़फ़ियत कि तुम को (खास तौर पर) इजाज़त न हासिल हो जाए उन में न जाओ और अगर तुम से कहा जाए कि फिर जाओ तो तुम (बे ताम्मुल) फिर जाओ यही तुम्हारे वास्ते ज्यादा सफ़ाई की बात है और तुम जो कुछ भी करते हो खुदा उससे खूब वाकिफ़ है

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا ۚ بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ ۚ فِيهَا مَتَعٌ ۚ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ

इसमें अलबत्ता तुम पर इल्ज़ाम नहीं कि ग़ैर आबाद मकानात में जिसमें तुम्हारा कोई असबाब हो (बे इजाज़त) चले जाओ और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हो और जो कुछ छिपाकर करते हो खुदा (सब कुछ) जानता है

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا ۚ مِنْ أَبْصَرِهِمْ وَيَحْفَظُوا ۚ فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ ۚ بِمَا يَصْنَعُونَ

(ऐ रसूल) ईमानदारों से कह दो कि अपनी नज़रों को नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें यही उनके वास्ते ज्यादा सफाई की बात है ये लोग जो कुछ करते हैं खुदा उससे यकीनन खूब वाक्फि है

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَرِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۚ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۚ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَاتِ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمُنُهُنَّ أَوِ التَّبَعِينَ غَيْرَ ۚ أَوْ إِلَىٰ الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا ۚ عَلَىٰ عَوْرَتِ النِّسَاءِ ۚ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۚ وَتَوْبُوا ۚ إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

और (ऐ रसूल) ईमानदार औरतों से भी कह दो कि वह भी अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपने बनाव सिंगार (के मक़ामात) को (किसी पर) ज़ाहिर न होने दें मगर जो खुद ब खुद ज़ाहिर हो जाता हो (छुप न सकता हो) (उसका गुनाह नहीं) और अपनी ओढ़नियों को (घूँघट मारके) अपने ग़रेबानों (सीनों) पर डाले रहें और अपने शौहर या अपने बाप दादाओं या आपने शौहर के बाप दादाओं या अपने बेटों या अपने शौहर के बेटों या अपने भाइयों या अपने भतीजों या अपने भांजों या अपने (क्लिस्म की) औरतों या अपनी या अपनी लौंडियों या (घर के) नौकर चाकर जो मर्द सूरत हैं मगर (बहुत बूढ़े होने की वजह से) औरतों से कुछ मतलब नहीं रखते या वह कमसिन लड़के जो औरतों के पर्दे की बात से आगाह नहीं हैं उनके सिवा (किसी पर) अपना बनाव सिंगार ज़ाहिर न होने दिया करें और चलने में अपने पाँव ज़मीन पर इस तरह न रखें कि लोगों को उनके पोशीदा बनाव सिंगार (झंकार वगैरह) की ख़बर हो जाए और ऐ ईमानदारों तुम सबके सब खुदा की बारगाह में तौबा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ

وَأَنْكِحُوا ۚ الْأَيْمَىٰ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِنْ يَكُونُوا ۚ فَقَرَاءَ ۚ يَغْنَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ ۚ وَاللَّهُ وَسِعَ عَلِيمٌ ۚ

और अपनी (क़ौम की) बेशौहर औरतों और अपने नेक बख्त गुलामों और लौंडियों का निकाह कर दिया करो अगर ये लोग मोहताज़ होंगे तो खुदा अपने फ़ज़ल व (करम) से उन्हें मालदार बना देगा और खुदा तो बड़ी गुन्जाइश वाला वाक्फि कार है

وَلَيْسْتَغْفِرَ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ ۚ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ
 الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ ۚ وَأَتَوْهُمْ مِنْ مَّالِ
 اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا ۚ فَتِيَّتُكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا ۚ لِيَبْتِغُوا ۚ
 عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يُكْرِهْنَنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ ۚ بَعْدَ إِكْرِهِنَّ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

और जो लोग निकाह करने का मक़दूर नहीं रखते उनको चाहिए कि पाक दामिनी एख्तियार करें यहाँ तक कि खुदा उनको अपने फ़ज़ल व (करम) से मालदार बना दे और तुम्हारी लौन्डी गुलामों में से जो मकातबत होने (कुछ रुपए की शर्त पर आज्ञादी का सरख़त लेने) की ख्वाहिश करें तो तुम अगर उनमें कुछ सलाहियत देखो तो उनको मकातिब कर दो और खुदा के माल से जो उसने तुम्हें अता किया है उनका भी दो और तुम्हारी लौन्डियाँ जो पाक दामन ही रहना चाहती हैं उनको दुनियावी ज़िन्दगी के फायदे हासिल करने की गरज़ से हुराम कारी पर मजबूर न करो और जो शख्स उनको मजबूर करेगा तो इसमें शक नहीं कि खुदा उसकी बेबसी के बाद बड़ा बख़्शने वाले मेहरबान है

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا ۚ ۚ مِنَ الَّذِينَ خَلَوْا ۚ ۚ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً ۚ ۚ
 لِلْمُتَّقِينَ

और (ईमानदारों) हमने तो तुम्हारे पास (अपनी) वाज़ेए व रौशन आयतें और जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी हालतें और परहेज़गारों के लिए नसीहत (की बातें) नाज़िल की

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أََعْمَلُهُمْ كَسْرَابٍ ۖ بِقِيَعَةٍ ۖ يَحْسَبُهُ الظَّمَانُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ ۖ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا ۖ وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ ۖ فَوَقَّاهُ حِسَابَهُ ۖ ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तेयार किया उनकी कारस्तानियाँ (ऐसी है) जैसे एक चटियल मैदान का चमकता हुआ बालू कि प्यासा उस को दूर से देखे तो पानी ख्याल करता है यहाँ तक कि जब उसके पास आया तो उसको कुछ भी न पाया (और प्यास से तड़प कर मर गया) और खुदा को अपने पास मौजूद पाया तो उसने उसका हिसाब (किताब) पूरा पूरा चुका दिया और खुदा तो बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

أَوْ كَظُلُمٍ ۖ فِي بَحْرٍ ۖ لُّجِّيٍّ ۖ يَغْشَاهُ مَوْجٌ ۖ مِّنْ فَوْقِهِ ۖ مَوْجٌ ۖ مِّنْ فَوْقِهِ ۖ
سَحَابٌ ۖ ۚ ظُلُمٌ ۖ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۖ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ ۖ لَمْ يَكَدْ يَرِهَا ۖ وَمَنْ لَّمْ
يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا ۖ فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ

(या काफिरों के आमाल की मिसाल) उस बड़े गहरे दरिया की तारिकियों की सी है- जैसे एक लहर उसके ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर अब्र (तह ब तह) ढाँके हुए हो (गरज) तारिकियाँ है कि एक से ऊपर एक (उमड़ी) चली आती हैं (इसी तरह से) कि अगर कोई शख्स अपना हाथ निकाले तो (शिद्दत तारीकी से) उसे देख न सके और जिसे खुद खुदा ही ने (हिदायत की) रौशनी न दी हो तो (समझ लो कि) उसके लिए कहीं कोई रौशनी नहीं है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ ۖ مَن فِي السَّمُوتِ ۖ وَالْأَرْضِ ۖ وَالطَّيْرِ ۖ صَفَّاتٍ ۖ ۚ كُلٌّ ۖ قَدْ
عَلِمَ صَلَاتَهُ ۖ وَتَسْبِيحَهُ ۖ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۖ بِمَا يَفْعَلُونَ

(ऐ शख्स) क्या तूने इतना भी नहीं देखा कि जितनी मखलूक़ात सारे आसमान और ज़मीन में हैं और परिन्दों पर फैलाए (गरज सब) उसी को तस्बीह किया करते हैं सब के सब अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह का तरीका खूब जानते हैं और जो कुछ ये किया करते हैं खुदा उससे खूब वाक्फ़ है

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوتِ ۖ وَالْأَرْضِ ۖ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ

और सारे आसमान व ज़मीन की सल्तनत ख़ास खुदा ही की है और खुदा ही की तरफ (सब को) लौट कर जाना है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ۖ ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ۚ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا ۚ فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ ۚ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ ۚ فَيُصِيبُ بِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ ۚ عَنْ مَنْ يَشَاءُ ۚ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ ۚ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَرِ

क्या तूने उस पर भी नज़र नहीं की कि यक़ीनन खुदा ही अब्र को चलाता है फिर वही बाहम उसे जोड़ता है-फिर वही उसे तह ब तह रखता है तब तू तो बारिश उसके दरमियान से निकलते हुए देखता है और आसमान में जो (जमे हुए बादलों के) पहाड़ है उनमें से वही उसे बरसाता है- फिर उन्हें जिस (के सर) पर चाहता है पहुँचा देता है- और जिस (के सर) से चाहता है टाल देता है- करीब है कि उसकी बिजली की कौन्द आखों की रौशनी उचके लिये जाती है

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً ۚ لَأُولِ الْأَبْصَرِ

खुदा ही रात और दिन को फेर बदल करता रहता है- बेशक इसमें आँख वालों के लिए बड़ी इब्रत है

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ ۚ مِنْ مَّاءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

और खुदा ही ने तमाम ज़मीन पर चलने वाले (जानवरों) को पानी से पैदा किया उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो दो पाँव पर चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो चार पावों पर चलते हैं- खुदा जो चाहता है पैदा करता है इसमें शक नहीं कि खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

لَقَدْ أَنْزَلْنَا ءَايَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

हम ही ने यक़ीनन वाजेए व रौशन आयतें नाज़िल की और खुदा ही जिसको चाहता है सीधी राह की हिदायत करता है

وَيَقُولُونَ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ ۚ مِنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ

और (जो लोग ऐसे भी है जो) कहते हैं कि खुदा पर और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत कुबूल की- फिर उसके बाद उन में से कुछ लोग (खुदा के हुक्म से) मुँह फेर लेते हैं और (सच यूँ है कि) ये लोग ईमानदार थे ही नहीं

وَإِذَا دُعُوا ۚ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ ۚ مِنْهُمْ مُّعْرِضُونَ

और जब वह लोग खुदा और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाते हैं ताकि रसूल उनके आपस के झगड़े का फैसला कर दें तो उनमें का एक फरीक रदगिरदानी करता है

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا ۚ إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ

और (असल ये है कि) अगर हक उनकी तरफ होता तो गर्दन झुकाए (चुपके) रसूल के पास दौड़े हुए आते

أَفَى قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ ۖ أَمْ أَرْتَابُوا ۚ أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

क्या उन के दिल में (कुफ्र का) मर्ज (बाक़ी) है या शक में पड़े हैं या इस बात से डरते हैं कि (मुबादा) खुदा और उसका रसूल उन पर जुल्म कर बैठेगा- (ये सब कुछ नहीं) बल्कि यही लोग ज़ालिम हैं

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا ۚ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا ۚ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

ईमानदारों का क़ौल तो बस ये है कि जब उनको खुदा और उसके रसूल के पास बुलाया जाता है ताकि उनके बाहमी झगड़ों का फैसला करो तो कहते हैं कि हमने (हुक़्म) सुना और (दिल से) मान लिया और यही लोग (आखिरत में) कामयाब होने वाले हैं

وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَيَخْشَ اللَّهَ ۚ وَيَتَّقْهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ

और जो शख्स खुदा और उसके रसूल का हुक़्म माने और खुदा से डरे और उस (की नाफरमानी) से बचता रहेगा तो ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेंगे

ۚ وَأَقْسَمُوا ۚ بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَنِهِمْ لَنْ أَمْرَتَهُمْ لِيَخْرُجُنَّ ۚ قُلْ لَا تُقْسِمُوا ۚ ۚ طَاعَةٌ ۚ مَعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) उन (मुनाफेक़ीन) ने तुम्हारी इताअत की खुदा की सख्त से सख्त क़समें खाई कि अगर तुम उन्हें हुक़्म दो तो बिला उज्र (घर बार छोड़कर) निकल खड़े हों- तुम कह दो कि क़समें न खाओ दस्तूर के मुवाफ़िक़ इताअत (इससे बेहतर) और बेशक तुम जो कुछ करते हो खुदा उससे ख़बरदार है

قُلْ أَطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۚ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि खुदा की इताअत करो और रसूल की इताअत करो इस पर भी अगर तुम सरताबी करोगे तो बस रसूल पर इतना ही (तबलीग) वाजिब है जिसके वह ज़िम्मेदार किए गए हैं और जिसके ज़िम्मेदार तुम बनाए गए हो तुम पर वाजिब है और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे और रसूल पर तो सिर्फ साफ तौर पर (एहकाम का) पहुँचाना फर्ज है

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مِنْكُمْ وَعَمِلُوا ۖ الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا أَستَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

(ऐ ईमानदारों) तुम में से जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन से खुदा ने वायदा किया कि उन को (एक न एक) दिन रूए ज़मीन पर ज़रूर (अपना) नाएब मुकर्रर करेगा जिस तरह उन लोगों को नाएब बनाया जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं और जिस दीन को उसने उनके लिए पसन्द फरमाया है (इस्लाम) उस पर उन्हें ज़रूर ज़रूर पूरी कुदरत देगा और उनके खाएफ़ होने के बाद (उनकी हर आस को) अमन से ज़रूर बदल देगा कि वह (इत्मेनान से) मेरी ही इबादत करेंगे और किसी को हमारा शरीक न बनाएँगे और जो शख्स इसके बाद भी नाशुक्री करे तो ऐसे ही लोग बदकार हैं

وَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَءَاتُوا ۚ الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا ۚ الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

और (ऐ ईमानदारों) नमाज़ पाबन्दी से पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और (दिल से) रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ

और (ऐ रसूल) तुम ये ख्याल न करो कि कुफ़ार (इधर उधर) ज़मीन में (फैल कर हमें) आजिज़ कर देंगे (ये खुद आजिज़ हो जाएंगे) और उनका ठिकाना तो जहन्नुम है और क्या बुरा ठिकाना है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لِيَسْتَذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمُنُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا ۙ الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ ۞ مِّن قَبْلِ صَلَوةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهْرِ ۚ وَمِن ۙ بَعْدِ صَلَوةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَتٍ ۚ لَّكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ ۙ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ ۞ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَاتِهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ ۞

ऐ ईमानदारों तुम्हारी लौन्डी गुलाम और वह लड़के जो अभी तक बुलूग की हद तक नहीं पहुँचे हैं उनको भी चाहिए कि (दिन रात में) तीन मरतबा (तुम्हारे पास आने की) तुमसे इजाज़त ले लिया करें तब आएँ (एक) नमाज़ सुबह से पहले और (दूसरे) जब तुम (गर्मी से) दोपहर को (सोने के लिए मामूलन) कपड़े उतार दिया करते हो (तीसरी) नमाज़े इशा के बाद (ये) तीन (वक्त) तुम्हारे परदे के हैं इन अवकात के अलावा (बे अज़न आने मे) न तुम पर कोई इल्ज़ाम है-न उन पर (क्योंकि) उन अवकात के अलावा (बे ज़रूरत या बे ज़रूरत) लोग एक दूसरे के पास चक्कर लगाया करते हैं-यूँ खुदा (अपने) एहकाम तुम से साफ साफ बयान करता है और खुदा तो बड़ा वाकिफ़कार हकीम है

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمْ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَذِنُوا ۚ ۞ كَمَا أَسْتَذِنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ ۞ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَاتِهِ ۚ ۞ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ ۞

और (ऐ ईमानदारों) जब तुम्हारे लड़के हदे बुलूग को पहुँचें तो जिस तरह उन के कब्ल (बड़ी उम्र) वाले (घर में आने की) इजाज़त ले लिया करते थे उसी तरह ये लोग भी इजाज़त ले लिया करें-यूँ खुदा अपने एहकाम साफ साफ बयान करता है और खुदा तो बड़ा वाकिफ़कार हकीम है

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا ۚ ۞ فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ ۚ ۞ بِزِينَةٍ ۚ ۞ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ ۚ ۞ لَهُنَّ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ ۞

और बूढ़ी बूढ़ी औरतें जो (बुढ़ापे की वजह से) निकाह की ख्वाहिश नहीं रखती वह अगर अपने कपड़े (दुपट्टे वगैराह) उतारकर (सर नंगा) कर डालें तो उसमें उन पर कुछ गुनाह नहीं है- बशर्ते कि उनको अपना बनाव सिंगार दिखाना मंज़ूर न हो और (इस से भी) बचें तो उनके लिए और बेहतर है और खुदा तो (सबकी सब कुछ) सुनता और जानता है

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ ۚ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ ۚ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۚ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا ۚ مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَلَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ ۚ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا ۚ عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً ۚ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ ۚ طَيِّبَةٌ ۚ كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

इस बात में न तो अंधे आदमी के लिए मज़ाएक़ा है और न लँगड़े आदमी पर कुछ इल्ज़ाम है- और न बीमार पर कोई गुनाह है और न खुद तुम लोगो पर कि अपने घरों से खाना खाओ या अपने बाप दादा नाना बग़ैरह के घरों से या अपनी माँ दादी नानी वग़ैरह के घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफ़ियों के घरों से या अपने मामूओं के घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उस घर से जिसकी कुन्जियाँ तुम्हारे हाथ में है या अपने दोस्तों (के घरों) से इस में भी तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि सब के सब मिलकर खाओ या अलग अलग फिर जब तुम घर वालों में जाने लगो (और वहाँ किसी का न पाओ) तो खुद अपने ही ऊपर सलाम कर लिया करो जो खुदा की तरफ से एक मुबारक पाक व पाकीज़ा तोहफा है- खुदा यूँ (अपने) एहक़ाम तुमसे साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम समझो

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ ءَامَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ ۚ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ ۚ لَمْ يَذْهَبُوا ۚ حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا أَسْتَأْذِنُكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَنْزِلْ مَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

सच्चे ईमानदार तो सिर्फ़ वह लोग हैं जो खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाए और जब किसी ऐसे काम के लिए जिसमें लोगों के जमा होने की ज़रूरत है- रसूल के पास होते हैं जब तक उससे इज़ाज़त न ले ली न गए (ऐ रसूल) जो लोग तुम से (हर बात में) इज़ाज़त ले लेते हैं वे ही लोग (दिल से) खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाए हैं तो जब ये लोग अपने किसी काम के लिए तुम से इज़ाज़त माँगें तो तुम उनमें से जिसको (मुनासिब ख़्याल करके) चाहो इज़ाज़त दे दिया करो और खुदा उसे उसकी बख़्शिश की दुआ भी करो बेशक़ खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

لَا تَجْعَلُوا ۚ دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ ا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ ا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ ۚ ا ۚ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

(ऐ ईमानदारों) जिस तरह तुम में से एक दूसरे को (नाम ले कर) बुलाया करते हैं उस तरह आपस में रसूल का बुलाना न समझो खुदा उन लोगों को खूब जानता है जो तुम में से आँख बचा के (पैगम्बर के पास से) खिसक जाते हैं- तो जो लोग उसके हुक्म की मुखालफत करते हैं उनको इस बात से डरते रहना चाहिए कि (मुबादा) उन पर कोई मुसीबत आ पड़े या उन पर कोई दर्दनाक अज़ाब नाज़िल हो

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ ا ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

ख़बरदार जो कुछ सारे आसमान व ज़मीन में है (सब) यक़ीनन खुदा ही का है जिस हालत पर तुम हो खुदा खूब जानता है और जिस दिन उसके पास ये लोग लौटा कर लाएँ जाएँगे तो जो कुछ उन लोगों ने किया कराया है बता देगा और खुदा तो हर चीज़ से खूब वाकिफ़ है